तो, चार मूड हैं जिनमें व्यक्ति अपने जीवन में घूमता रहता है- ईश्वरीय, सात्विक, राज और तामस। आसपास का वातावरण भी आपकी सोच पर काफी प्रभाव पड़ता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अब सवाल ये है कि समान वातावरण में रहते हुए भी किसी दो व्यक्तियों के सोचने में अंतर क्यों होना चाहिए? जवाब यह है कि, हर व्यक्ति असंख्य जीवन जी चुका है और उसने अपने पिछले जीवन में, कई अन्य व्यक्तियों, सिद्धांतों, दर्शनशास्त्रों के प्रभाव में कई कर्म किये थे। प्रत्येक क्रिया, जो की जाती है, आपके दिमाग पर अपना निशान सा छोड़ देती है। ये शिलालेख जो विचारों के एक अंश से बनता है उसे हिंदु दर्शन में संस्कार कहाते है। ये संस्कार आपको उसी प्रकार का कर्म करने के लिए प्रेरित करते है जिसके कारण वो बने है। इसका मतलब यह हुआ कि पिछले जन्मों में बार-बार जो कर्म किये गये हैं, उसके संस्कार बलवान हो जाते है और उन संस्कारों के कारण उस प्रकार के कर्म करना उस व्यक्ति का स्वभाव बन जाता है जिसे व्यक्तित्व विशेषता के रूप में देखा जा सकता है। संस्कार जितने अधिक बलवान होते है उतनाही अधिक उस संस्कार से संबंधित गतिविधियों को करने का जिद्दीपन होता है। संस्कारों की विविधता के कारण प्रत्येक व्यक्ति दूसरों की तुलना में अलग-अलग सोचता है। किस मनोदशा का प्रभुत्व होगा ये उस पल में सक्रिय संस्कार, उस संस्कार की तीव्रताऔर आसपास के वातावरण के प्रभाव पर निर्भर करता है। सक्रिय संस्कार में परिवर्तन खुशी प्राप्त करने के हेतु होते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132